Class - 12
Subject : Music

Teacher's name : Partha Sarkar
Date - 07.09.2021

यह ग्रंथ कुल चार भागों में प्रकाशित है । इस ग्रंथ के सातों अध्यायों का वर्णन इस प्रकार है।

1. स्वराध्याय

स्वराध्याय – इस अध्याय को 8 प्रकरणों में बांटा गया है।

(i) पहले प्रकरण का नाम है **पदार्थ संग्रह** है – जिसके अंतर्गत सबसे पहले शिव की स्तुति मंगलाचरण के द्वारा की गई है। पूरे ग्रंथ का उद्देश्य पदार्थ संग्रह किया है। इस प्रकरण में 48 श्लोक हैं और इस प्रकरण का नाम भी पदार्थ संग्रह है।

(ii) **पिण्डोत्पत्ति प्रकरण** – इसमें पहले गीत, वाद्य व नृत्य के लिए नाद की अनिवार्यता बताई गई है और नाद की प्रशंसा की गई है।

(iii) **नाद कुल, द्वैवत, दैवतार्षि, द्वैवाश्विछंदो, रस प्रकरण** :- 12 विकृत स्वर बताए गए हैं फिर वादी, संवादी, चार भेद, स्वर श्रुति, जाती आदि बातों का इसमें निरूपण किया गया है।

(iv) **ग्राम मूर्छना क्रमतान प्रकरण** :- सबसे पहले तीनों ग्रामों के लक्षण दिए हैं फिर तीनों ग्रामों को देवता और ऋतु समय बताया गया है।

(v) **पांचवा प्रकरण** :- स्वर साधारण और जाति साधारण इसमें दोनों प्रकार का साधारण और इन दोनों की विधि बताई गई है।

(vi) **वर्णालंकार प्रकरण** :- इस प्रकरण में वर्ण का लक्षण, उसके चार भेद, अलंकार का लक्षण, उसके चार प्रकार के अलंकार, आरोही, अवरोही, संचारी, स्थाई इनके लक्षण बताये हैं ।

(vii) **सातवां प्रकरण** :- इस प्रकरण में 18 जातियां, शुद्धा जातियों के विकृत भेद, दोनों ग्रामों की जातियां और उसके निश्चित प्रकार, ग्रह, अंश आदि जातियों के 13 लक्षण, 18 जातियों के अलग-अलग लक्षण प्रस्तार सहित हैं।

(viii) **गिनती प्रकरण** :- सात प्रकार के कपाल, चार प्रकार की गीति, मागधी इत्यादि के बारे में बताया गया है।